ધોરણ-9
વિષય : હિન્દી

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પતિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
1. दो बैलों की कथा	H0904, H0907, H0909, H0912, H0913,	–
2. ल्हासा की ओर	H0903, H0904, H0913, H0915, H0917, H0918	–
3. उपभोक्तावाद की संस्कृति	H0901, H0902, H0905, H0907, H0910, H0912, H0913, H0918	–
4. साँवले सपनों की याद	H0905, H0906, H0907, H0912, H0913, H0914	–
5. नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया	H0905, H0907, H0910, H0913, H0919,	–
6. प्रेमचंद के फटे जूते	H0904, H0910, H0913, H0915, H0918	
7. मेरे बचपन के दिन	H0903, H0913, H0915	
8. एक कुत्ता और एक मैना	H0906, H0907, H0913	
9. साखियाँ एवं सबद	H0901, H0910, H0911, H0913, H0917, H0919	–
10. वाढ	H0910, H0913, H0917, H0919	
11. सवैये	H0911, H0913, H0919	–
12. कैदी और कोकीला	H0906, H0908, H0911, H0913	
13. ग्राम श्री	H0908, H0911, H0914, H09016, H0918	–
14. चंद्र गहना से लौटती बेर	H0908, H0911, H0913, H0915, H0916	
15. मेघ आए	H0904, H0908, H0909, H0911, H0913 H0916, H0918,	–
16. यमराज की दिशा	H0901, H0910, H0914	
17. बच्चे काम पर जा रहे है	H0901, H0908, H0910	

ધોરણ-10
વિષય : હિન્દી

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પતિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
1. पद	H1011, H1012	–
2. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	H1005, H1011, H1012	–
3. सवैया-कवित	H1011, H1012	–
4. आत्मकथा	H1008	–
5. उत्साह अट नहीं रही है	H1015, H1011, H1015	
6. यह दन्तुरित मुस्कान फसलं	H1009, H1015	–
7. छाया मत छूना	H1009, H1018	–
8. कन्यादान	H1004, H1005, H1015	–
9. संगतकार	H1006	–
10. नेताजी का चश्मा	H1001, H1005, H1006, H1008, H1009, H1012, H1014, H1016	–
11. बालगोबिन भगत	H1001, H1011, H1013, H1014, H1019,	–
12. लखनवी अन्दाज	H1007, H1011, H1012, H1013, H1017,	–
13. मानवीय करुणा की दिव्य चमक	H1006, H1010, H1012, H1013	–
14. एक कहानी यह भी	H1002, H1007, H1012, H1014	
15. स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन	H1002, H1003, H1004, H1005, H1006 H1015	–
16. नौबतखाने में इबादत	H1007, H1011, H1012	–
17. संस्कृति	H1002, H1005, H1006, H1012	–
18. मुक्तानि मुक्तकानि	S1003, S1006,	–

कक्षा - 9/10 : हिन्दी (प्रथम भाषा / द्वितीय भाषा)

प्रस्तावना :

नवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा, शैली और विचार बोध एक ऐसा आधार बन चुका होता है कि अब उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए जरुरी संसाधन मुहैया कराए जाने की आवश्यकता होती है । माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी किशोर हो चुका होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढने, लिखने एवं समझने के साथ साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है । भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता/गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अंतर । राजनैतिक चेतना एवं सामाजिक चेतना का विकास हो जाता है । वह आस-पडोस की भाषा और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा-प्रयोग, शब्दो के सुचिंतित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से परिचित हो जाता है । इतना ही नहीं वह विभिन्न विद्याओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ हो चुका होता है । अब विद्यार्थी की पढाई आस-पडोस, राज्य-देश की सीमा को लाँधते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जातीा है । इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फिल्म तथा अन्य कलाओं के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ और अलग-अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं ।

यह आवश्यकता है की इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक भाषा के रुप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते यह विद्यार्थीयों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके । प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ-साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके । हिंदी की प्रकृति के अनुसार वर्तनी और उच्चारण के आपसी संबंध को समझ सके, ताकि उसकी लिखित और मौखिक भाषा में एक समानता एवं स्पष्टता हो ।

भाषा को सीखना-सिखाना :

इस संदर्भ में हम यही कहेंगे कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रुप में हम भाषा को पहचानते और समझते रहे हैं, इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढते हुए बडे हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है, यानी भाषा के जरिए ही हम कुछ कहते और लिखते है और किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढते है, इसलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भुल ही गए कि कहने-स ुनने वाला सोचता भी है । इस संदर्भ में बर्तोल ब्रेख्त की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य है, जिनमें सोचने के कौशल की और इशारा है 'जनरल' आदमी कितना उपयोगी है, वह उड. सकता है और मार सकता है । लेकिन उसमें एक नुक्ष है वह सोच सकता है । ''बच्चे जो कुछ देखने या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि और समझ से देखते-सुनते हैं और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते और लिखते हैं । यह दृष्टि समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है, इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को उपयुक्त अभिव्यक्ति में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए । जबकि हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद्व शुरु हो जाता है । इस द्वंद्व से माध्यमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोरावस्था में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पडत़ा है । उनके पास अनेक सवाल है, अपने आस-पास के समाज और संसार से । जिनका जवाब वे ढूंढ रहे हैं । अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और जवाबों को, उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी । इसलिए कक्षा में भाषा-कौशलो को एक साथ जोडक़र पढने-पढाने कृ दृष्टि भी विकसित करनी होगी । यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा-कौशलों को बेहतर बनाने के लिए बच्चे के परिवेश में उस भाषा की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो । खासतौर से द्वितीय भाषा के रुप में हिंदी पढने-पढाने वालों के लिए यह जरुरी होगा । भाषा पढऩे के माहैल और प्रक्रिया के अनुसार ही बच्चों में सीखने के प्रतिफल रुपी गुण जाग्रत होंगे ।

द्वितीय भाषा के रुप में हिंदी में निपुणता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा में पाठ्यसामग्री के साथ-साथ हिंदी में लगातार रोचक अभ्यास (शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया) करना-कराना । यह प्रक्रिया जितनी अधिक रोचक, सक्रिय एवं प्रासंगिक होगी, विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि भी उतनी तेजी से बढेग़ी । मुखर भाषिक अभ्यास के लिए वार्तालाप, रोचक ढंग से कहानी कहना-सुनाना, घटना-वर्णन, चित्र-वर्णन, वाद-विवाद, अभिनय,

भाषण प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है । विभिन्न प्रकार के श्राव्य-दृश्य - वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को सीखने-सिखाने की सामग्री के रुप में इस्तेमानल किया जा सकता है । जैसा कि हम जानते है बहुभाषिकता हमारे ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया में सकारात्मक भूमिका निभाती है । भातृभाषा के विविध भाषा-कौशलों एवं ज्ञान का उपयोग शिक्षक एवं विद्यार्थी द्वितीय-भाषा के रुप में हिंदी सीखने-सिखाने के लिए कर सकते है । प्रयास यह हो कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी भाषा-साहित्य को समझ सकें, उसका आनन्द लें और अपने व्यवहारिक-जीवन में उसका उपयोग कर सकें ।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ :

- विद्यार्थी अगले स्तरे पर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरुप हिंदी की पढाई कर सकेंगे तथा हिंदी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे ।
- अपनी भाषा-दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे ।
- दैनिक व्यवहार, आवेदन पत्र लिखने, अलग-अलग किस्म के पत्र ई-मेल लिखने, प्राथमिकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सकेंगे ।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुंचकर, भाषा की विभिन्न प्रयुक्ति यों में मौजुद अंतर्संबंध को समझ सकेंगे ।
- हिंदी में दक्षता को वे अन्य भाषा-संरचनाओं की समझ विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे, स्थानातरित कर सकेंगे ।
- कक्षा आठवीं तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास कराना ।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास हो सकेगा ।
- स्वतंत्र और मौखिक रुप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास हो सकेगा ।
- साहित्य की विभिन्न विद्याओं के मध्य अंतर्संबंध एवं अंतर की पहचान कर सकेंगे ।
- भाषा और साहित्य के रचनात्मक उपयोग के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकेंगे ।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के, विमर्श की भाषा के रुप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना ।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कराना ।
- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयता, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वाग्रहों के चलते बनी रुढिय़ों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे ।
- विदेशी भाषाओं समेत विभिन्न भारतीय भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय कराना ।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास कराना ।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और उन्हें नए-नए तरीकों से प्रयोग करने की क्षमता का परिचय कराना ।
- अर्थपूर्ण विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तर्क क्षमता का विकास कराना ।
- भाषा के अमूर्त रुप को समझने की पूर्व-अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास कराना ।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास कराना ।

- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक और सामाजिक नजरिए का विकास कराना।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान कराना ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुडत़े हुए भाषा-प्रयोग की बारीकियों और सावधानियों से अवगत कराना ।

समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्चा समान रहती है एवं कक्षा-गतिविधियों में सभी बच्चों की प्रतिभागिता होनी चाहिए । विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्चा में कई बार रुपान्तरों की आवश्यकता होती है। दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए है, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं, जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती है, जैसे - दृष्टि बाधित, श्रव्य-बाधित इत्यादि । उन्हें अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है । उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं ।

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रारुपों (जैसे-पत्र लेखन, आवेदन आदि) को मौखिक रुप से समझाया जा सकता है ।
- विद्यार्थीयों के बोलकर पढऩे के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढा सकते हैं ।
- नए शब्दों की जानकारी ब्रेल लिपि में अर्थ सहित दी जानी चाहिए ।
- दैनिक गतिविधियों का मौखिक अर्थपूर्ण भाषिक अभ्यास ।
- शब्दों का विस्तृत उच्चारणगत हो, जैसे मिनट, विशाल, समुद्र, छोटे जीव तथा कीट इत्यादि ।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना । साथ ही बच्चों को भी प्रश्न-निर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लिए कहना ।
- उच्चारण सुधारने के लिए ऑडियो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनना । अलग-अलग तरह की आवाजों की रिकार्डिंग करके, जैसे - झरना, हवा, लहरें, तूफान, जानवर और परिवहन, ताकि उनके माध्यम से संकल्पना/धारणा/ विचार को समझाया जा सके ।
- विद्यार्थीयों को एक - दूसरे से बातचीत के लिए प्रेरित करना ।
- अभिनय, नाटक और भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले) का प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देना ।
- पढाए जाने वाले विषय पर दृश्य-शब्दकोश की सूचि तैयार की जाए, जैसे शब्दों को चित्रों के माध्यम से दिखाया-बताया जाए ।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना, यदि उपलब्ध हो तो शब्दकोश के शब्दों को चित्र के माध्यम से प्रयोग किया जाए ।
- नए शब्दों को बच्चों के रोजमर्ग के जीवन में इस्तेमाल करना और विभिन्न प्रसंगो में उनका प्रयोग करना।
- शीर्षक और विवरण के साथ दृश्यात्मक तरीके में कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना ।
- स्पष्ट रुप से समझाने के लिए फूटनोट को उदाहरण के साथ लिखना ।
- संप्रेषण के विभिन्न तरीकों (जैसे - मौखिक एवं अमौखिक ग्राफिक्स, कार्टून्स (बोलते हुए गुब्बारे), चित्रों, संकेतों, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण) का प्रयोग करना ।
- लिखित सामग्री को छोटे-छोटे एवं सरल वाक्यों में तोडऩा, संक्षिप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना ।

- बच्चों को इस योग्य बनाना कि वे रोजमर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल, पत्रिका इत्यादि के रुप में लिख सकें ।
- वाक्यों की बनावट पर आधारित अभ्यासों को बार-बार देना, ताकि बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके । चित्रों/समाचारों/समसामयिक घटनाओं से उदाहरणों का प्रयोग करें ।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्य्-सामग्री तथा संसाधन प्रदान करना ।
- पाठ में आए मुख्य शब्दों पर आधारित तरह-तरह के अनुभवों को देना ।
- कलर कोर्डिंग (colour coding) प्रयोग करना (जैसे-स्वर एवं व्यंजन के लिए अलग-अलग रंगो का प्रयोग), कांसेप्ट मैप (concept map) तैयार करना ।
- प्रस्तुतीकरण के लिए विभिन्न शैली एवं तरीकों, जैसे-दृश्य, श्रव्य, प्रायोगिक शिक्षण इत्यादि का प्रयोग।
- अनुच्छेदों को सरल बनाने के लिए उनकी जटिलता को कम किया जाए ।
- सामग्री को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए भिन्न-भिन्न विचारों, नए शब्दों के प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्तविक जीवन के अनुभवों, कहानी प्रस्तुतीकरण, वास्तविक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है ।
- अच्छी समझ के लिए जरुरी है कि विषय से संबंधित पृष्ठभूमि के बारे में पूर्व ज्ञान से जोडत्ने हुए नई सूचना दी जाए ।
- कविताओं का पठन, समुचित भावाभिव्यक्ति/अभिनय/गायन के साथ किया जाए ।
- पाठों के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में विभिन्न समूहों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है ।
- पठन-कार्य को अच्छा बनाने के लिए दो-दो बच्चों के समूह द्वारा पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करवाया जाए।
- कठिन शब्दों के लिए शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची, उन शब्दों के साथ ही कोष्ठक में लीखे जाएँ । जिन शब्दों की व्याख्या जरुरी हो, उन्हें व्याख्यायित किया जाए तथा सारांश को रेखांकित किया जाए।
- सीखने के प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों तथा बच्चों को सिखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सुविधा के लिए विकसित किए गए हैं ।
- माध्यमिक स्तर (9-10) पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहैल में विशेष अंतर नहीं किया गया है । यद्यपि भाषा सीखने-सिखाने के विकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है ।
- भाषा सीखने के प्रतिफलों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लिए, दस्तावेज में प्रारंभिक पृष्ठभूमि दी गई है । इसे पढें, यह बच्चों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी ।
- इसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005 के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं ।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओ को विद्यार्थी तभी हासिक कर सकता है, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनुकूल माहौल हो ।
- यद्यपि हमारी कोशिश यही रही है कि कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, लेकिन भाषा की कक्षा में सीखने के विभिन्न चरणों को देखते हुए प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है ।
- सीखने के प्रतिफल बच्चे के मनोवैज्ञानिक, धरातल को ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्रक्रिया के सभी अधिगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं ।
- ये प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे,

DTP-PC-1\GSEB\2022\AdHyan_Nispati\Std-9,10_HINDI(EL)

क्योंकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे को लगातार फीडबैक (प्रतिपुष्टि) भी मिलता जाएगा ।

- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद जरुरी है ।
- ये प्रतिफल विद्यार्थी की योग्यता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओ से जुडे हुए है । आप देखेंगे कि विद्यार्थी की आयु. स्तर और परिवेश की भिन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सिद्धांत परिणाम में भी बदलाव आता है ।
- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं, सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के विकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है ।
- अलग-अलग शिक्षार्थी-समूहों एवं भाषाये परिवेश के अनुसार उल्लिखित एक ही प्रतिफल का अलग-अलग स्तर संभव है, जैसे लिखने-पढने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार संबंधित प्रतिफलों का विविध स्तर हो सकता है ।
- इस दस्तावेज में चिह्नित किए गए प्रतिफलों के अतिरिक्ति-प्रतिफलों की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए ।

कक्षा-9 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

सीखने-सीखाने की प्रक्रिया	क्रम	सीखने के प्रतिफल
सभी विद्यार्थीयों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रुप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि....		**विद्यार्थी....**
	H0901	सामाजिक मुद्दों (लिंग भेद, जातिभेद, विभिन्न प्रकार के भेद) पर कार्यक्रम सुनकर/देखकर अपनी राय व्यक्त करते हैं । जैसे - जब सब पढे. तो पडोस की मुसकान क्यों न पढें ? या मुसकान अब पार्क में क्यों नही आती ?
● संगीत, लोक-कलाओं, फिल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढऩे या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/ सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हो । विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें ।	H0902	अपने आस-पास के लोगों, स्कूली सहायकों या स्कूली साथियों की आवश्यकताओं को कह और लीख पाते हैं ।
	H0903	पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त नई रचनाओं के बारे में जानने/समझने को उत्सुक है और उन्हें पढऩे हैं ।
● उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविजन पर खेल, फिल्म, संगीत तथा अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम देखें/सुने और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें ।	H0904	अपनी पसंद की अथवा किसी सुनी हुई रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढकर पढने की कोशिश करते हैं ।
● रेडियो और टेलीविजन पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों ।	H0905	समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, खेल, फिल्म, साहित्य संबंधी समीक्षाओं, रिपोर्टो को देखते, सुनते और पढऩे हैं ।
● अपने आस-पास के लोगों की जरुरतों को जानने/ समझने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों ।	H0906	देखी-सुनी, सुनी-समझी, पढी और लिखी घटनाओं/ रचनाओं पर स्पष्टत: मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति करते हैं ।
● हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो ।	H0907	दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उन्हें समझते हुए अपनी स्पष्ट राय व्यकत करते हैं ।
● अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लिखने के अवसर हों ।	H0908	अपने अनुभवो, भावों और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करते हैं । जैसे आँख बंद करके यह दुनिया व्हीलचेर से खेल मैदान आदि।
● अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों ।	H0909	किसी सुनी, बोली गई कहानी, कविता अथवा अन्य रचनाओ को रोचक ढंग से आगे बढाऩे हुए लिखते हैं ।
● अपनी भाषा पढऩे हुए लिखने की स्वतंत्रता हो।		
● सक्रिय और जागरुक बनाने वाले स्रोत, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ओडियो-वीडियो) सामग्री को देखने, सुनने, पढने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हो।	H0910	सामाजिक मुद्दों पर ध्यान देते हूए पत्र, नोट लेखन इत्यादि कर पाते है ।
	H0911	पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त, जैसे कविता, कहानी, एकांकी, गद्य-पद्य की अन्य विधाओं को पढते-लिखते हैं और कविता की
● कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित		

कक्षा-9 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

सीखने-सीखाने की प्रक्रिया	क्रम	सीखने के प्रतिफल
करनेवाली गतिविधियों, जैसे अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों ।		ध्वनि और लय पर ध्यान देते हैं ।
	H0912	संगीत, फिल्म, विज्ञापनों खेल आदि की भाषा पर ध्यान देते है । जैसे उपर्युक्त विषयों की समीक्षा करते हुए उनमें प्रयुक्त रजिस्टरों का उपयोग करते हैं ।
● अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों ।	H0913	भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली-संरचना, मौलिकता आदि ।
● कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधो को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरुप पर चर्चा हो, जैसे आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि ।	H0914	अपने आस-पास के रोजाना बदलते पर्यावरण पर ध्यान देते है तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सचेत होते हैं । जैसे कल तक यहाँ पेड. था, अब यहाँ इमारत बनने लगी ?
● भाषा-साहित्य के सामाजिक सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों ।	H0915	अपने साथियों की भाषा, उनके विचार, व्यवहार, खान-पान, पहनाबा संबंधी जिज्ञासा को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं ।
● संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे जाति, धर्म, रीति-रिवाज, लिंग आदि ।	H0916	हस्तकला, वास्तुकला, खेतीबाडी के प्रति अपनी रुचि व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता रखते हैं ।
● कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगो को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों ।	H0917	जाति, धर्म, रीति-रिवाज, लिंग आदि मुद्दो पर प्रश्न करते हैं ।
	H0918	अपने परिवेशकी समस्याओं पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत/चर्चा करते हैं ।
● कहानी, कविता, निबंध आदि विद्याओ में व्याकरण के विविध प्रयोगो तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों ।	H0919	सभी विद्यार्थी अपनी भाषाओं की संरचना में हिंदी की समानता और अंतर को समझते हैं ।
● विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों ।		
● रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों ।		

DTP-PC-1\GSEB\2022\AdHyan_Nispati\Std-9,10_HINDI(FL)

कक्षा-10 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

सीखने-सीखाने की प्रक्रिया	क्रम	सीखने के प्रतिफल
सभी विद्यार्थीयों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रुप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि....		**विद्यार्थी....**
	H1001	अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय मौखिक एवं लिखित रुप में व्यक्त करते हैं । जैसे मुसकान आजकल चुप क्यों रहती है ? मुसकान को स्कूल में हम लाएँगे ।
● संगीत, लोक-कलाओं, फिल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढऩे या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/ सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हो । विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें ।	H1002	अपने आस-पास और स्कुली साथियो की जरुरतों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। जैसे भाषण या वाद विवाद में इन पर चर्चा करते हैं ।
● उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविजन पर खेल, फिल्म, संगीत तथा अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम देखें/सुने और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें ।	H1003	आंखो से न देख सकनेवाले साथी की जरुरत की पाठ्यसामग्री को उपलब्ध कराने के संबंध में पुस्तकालयाध्यक्ष से बोलकर और लिखकर निवेदन करते हैं ।
● रेडियो और टेलीविजन पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों ।	H1004	न बोल सकने वाले साथी की बात को समझकर अपने शब्दों में बताते हैं ।
● अपने आस-पास के लोगों की जरुरतों को जानने/ समझने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों ।	H1005	नई रचनाएँ पढक़र उन पर परिवार एवं साथियों से बातचीत करते हैं ।
● हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो ।	H1006	रेडियो, टी.वी. या पत्र-पत्रिकाओं व अन्य श्राव्य-दृश्य संचार माध्यमों से प्रसारित प्रकाशित रुप को कथा साहित्य एवं रचनाओं पर मौखिक एवं लिखित टिप्पणी विश्लेषण करते है । पत्रिका पर प्रसारित/ प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों की समीक्षा पर अपनी टिप्पणी देते हुए विश्लेषण करते हैं ।
● अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लिखने के अवसर हों ।	H1007	अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं को सृजनात्मक ढंग से लिखते है । जैसे कोई यात्रा वर्णन, संस्मरण लिखना ।
● अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों ।	H1008	कविता या कहानी की पुन:रचना कर पाते है। जैसे किसी चर्चित कविता में कुछ पंक्तियां जोडकर नई रचना बनाते है ।
● अपनी भाषा पढऩे हुए लिखने की स्वतंत्रता हो ।	H1009	औपचारिक पत्र, जैसे प्रधानाचार्य, संपादक को अपने आस-पास की समस्याओं/मुद्दों को ध्यान में रखकर पत्र लिखते हैं ।
● सक्रिय और जागरुक बनाने वाले स्रोत, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ओडियो-वीडियो) सामग्री को देखने, सुनने, पढने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हो ।	H1010	रोजमर्ज के जीवन से अलग किसी घटना स्थिति विशेष में भाषा का काल्पनिक और सुजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते है। जैसे दिन में रात बिना ..... एक दिन बिना आँखो के एक दिन आदि ।
● कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करनेवाली गतिविधियों, जैसे अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन,		

कक्षा-10 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

सीखने-सीखाने की प्रक्रिया	क्रम	सीखने के प्रतिफल
विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों ।	H1011	पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य कविता, कहानी, एकांकी को पढते-लिखते और मंचन करते हैं ।
● अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों ।	H1012	भाषा साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली के प्रयोगिक प्रयोग एवं संरचना आदि ।
● कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधो को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरुप पर चर्चा हो, जैसे आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि ।	H1013	विविध साहित्यिक विद्याओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरुप का विश्लेषण निरुपण करते हैं ।
	H1014	विभिन्न साहित्यिक विद्याओं को पढते हुए व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा/टिप्पणी करते हैं ।
● भाषा-साहित्य के सामाजिक सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों ।	H1015	प्राकृतिक एवं सामाजिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं ।
● संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे जाति, धर्म, रीति-रिवाज, लिंग आदि ।	H1016	फिल्म एवं विज्ञापनों को देखकर उनकी समीक्षा लिखते हुए, दृश्यमाध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं ।
● कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगो को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों ।	H1017	परिवेशगत भाषा प्रयोगो पर प्रश्न करते हैं । जैसे रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट/बस स्टेंन्ड, ट्रक, ऑटो रिक्शा पर लिखी कई भाषाओं में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देंगे ।
● कहानी, कविता, निबंध आदि विद्याओ में व्याकरण के विविध प्रयोगो तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों ।	H1018	अपने परिवेश की बेहतर बनाने की कोशिश में सृजनात्मक लेखन करते हैं । जैसे क्या क्या रिसाइकलिंग कर सकते हैं और पेडों को कैसे बचाएँ।
● विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों ।		
● रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों ।	H1019	हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाडी के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते है तथा इनमें प्रयुक्त कलात्मक संदर्भो भाषिक प्रयोगो को अपनी भाषा में जोडकर बोलते-लिखते हैं ।

DTP-PC-1\GSEB\2022\AdHyan_Nispati\Std-9,10_HINDI(FL)